

नानक निरंकार आयो ( १५४ )

प्रगटे नानक चंद अमड़ि त्रिप्ता नंद  
सन्तनि सुख कंद अजी वाह वाह  
भए पिता भगवान दीयो दीननि को दान  
जायो लालु गुणवान अजी वाह वाह ॥

देखि कलि काल को दयाल भए हरी  
मैया त्रिप्ता की गोदी रतन सों भरी  
भए नाम अवतार गुरु नानक निरंकार  
कीना जग का उधार अजी वाह वाह ॥

देखि मुख चंद्र को चंद्र लजाए  
सुर मुनि गगन से फूल वर्षाए  
गुर नानक भयो नाम जांको रूपु अभिराम  
सब पूरण भए काम अजी वाह वाह ॥

बहनि नानकी जै राम के भए मन के आनंद  
गुर देव के मुख कमल के भए मतिवारे मिलंद  
सब नाचें नर नारि गाए मंगलाचार  
भए जै जै कार अजी वाह वाह ॥

सतिनाम ऐं सतिसंग का प्रवाह चलाया  
भटकते जड़ जीव को हरी शरण में लाया  
किए नज़रे निहाल, नर नारि बुढ़ा ब़ार  
बिन कारण कृपाल अजी वाह वाह ॥

दीनिता भरी भक्ति की गुरु अ नींव लगाई  
करतार की कृपा से वह सुगम बताई  
वेदी वंश सरदार सची भक्ति के भण्डार  
श्री मैगसि रखवार अजी वाह वाह ॥